MULTIDISCIPLINARY COSMOPOLITAN JOURNAL OF RESEARCH
(MUCOJOR)-2583-9829 (Online)
International Peer Reviewed & Referred Journal
ISSN: 2583-9829, Volume: 01, Issue: 02, December 2023

शिक्षित बेरोजगार - शिक्षा के समक्ष एक चुनौती

सौरभकुमार रणजीतसिंह वसावा, शोध छात्र, समाजशास्त्र विभाग, भक्त कवि नरसिंह महेता युनि, जूनागढ.

अमूर्त:

व्यक्ति और समाज को बेहतर बनाने का शिक्षा का कथित लक्ष्य अपने मौजूदा स्वरूप में गायब नजर आ रहा है। हर किसी को शिक्षित करने की होड़ में हम लोगों से यह पूछना ज़रूरी नहीं समझते कि हमें शिक्षा की आवश्यकता क्यों है। बेरोजगारी शिक्षित युवाओं में 'सफेदपोश नौकरियों' के प्रति दीवानगी का परिणाम है। शिक्षा और व्यावसायिक मार्गदर्शन सुविधाओं की कमी कुछ अन्य कारक हैं जो बेरोजगारी में योगदान करते हैं। दुनिया में अस्तित्व के लिए तीव्र संघर्ष चल रहा है। युवाओं को अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद उपयुक्त रोजगार पाने में बहुत कठिनाई होती है। प्रोफेशन चुनते समय ज्यादातर युवाओं का एकमात्र मकसद पैसा कमाना होता है। यही प्रवृत्ति उनके जीवन में असफलता का मूल कारण है। वे ऐसा करियर नहीं चुनते जिसके लिए उनमें क्षमता या योग्यता हो। नतीजा यह होता है कि वे असफल हो जाते हैं और जल्दी पैसा कमाने के लिए अपराधी बन जाते हैं। इसलिए युवा पुरुषों और महिलाओं को शैक्षिक और व्यावसायिक मार्गदर्शन प्रदान करना आवश्यक है। इससे उन्हें अपनी क्षमता और योग्यता के अनुरूप पेशा चुनने में मदद मिलेगी। इससे बेरोजगारी की समस्या को दूर करने में भी मदद मिलेगी.

खोजशब्द: शिक्षा, बेरोजगारी, समाज, अर्थव्यवस्था।

1. परिचय

भारत के शिक्षित युवा शिक्षित बेरोजगारी और अल्प रोजगार जैसे कुछ गंभीर मुद्दों का सामना कर रहे हैं। शिक्षित बेरोजगारी स्नातकों की आकांक्षाओं और उनके लिए उपलब्ध रोजगार के अवसरों के बीच बेमेल होने के कारण है। बेरोज़गारी से तात्पर्य बेरोज़गार होने या नौकरी न होने की स्थिति यानी बेरोज़गारी से है। एक व्यक्ति को बेरोजगार कहा जाता है यदि वह काम की तलाश में है या प्रचलित मजदूरी पर काम करने को तैयार है लेकिन नौकरी पाने में असमर्थ है।

भारत में लगभग 20 लाख स्नातक और 05 लाख स्नातकोत्तर बेरोजगार हैं। यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि बेरोजगारी का स्तर शिक्षा के स्तर के साथ बढ़ता है। 'प्राथमिक' स्तर पर बेरोजगारी 3.6% है, जो मैट्रिक स्तर पर बढ़कर 5.2% हो जाती है। स्नातक स्तर पर यह बढ़कर 8% और स्नातकोत्तर स्तर पर 9.3% हो जाता है। बेरोजगारों में से अधिकांश कला और विज्ञान संकाय से हैं। कला डिग्री धारकों के बीच बेरोजगारी का प्रतिशत योग्यता के स्तर के साथ बढ़ता है लेकिन विज्ञान डिग्री धारकों के मामले में गिरावट आती है। 39% कला स्नातक बेरोजगार हैं, कला स्ट्रीम के पेशेवर डिग्री धारकों के बीच प्रतिशत

बढ़कर 49% हो गया है। सामान्य स्नातकों की तुलना में इंजीनियरिंग स्नातकोत्तरों में अधिक बेरोजगारी है और वाणिज्य स्नातकों के मामले में इसका उलटा है।

भारतीय साक्षर युवाओं में बेरोजगारी का सबसे महत्वपूर्ण कारण नौकरियों की कमी, उपयुक्त नौकरियों की अनुपलब्धता और पारिवारिक जिम्मेदारियाँ हैं। उपयुक्त नौकरी न मिलने की समस्या का सामना ग्रामीण (46%) की तुलना में शहरी युवाओं (48%) को अधिक करना पड़ता है। जिन युवाओं ने अपने जीवन के दस से सोलह बहुमूल्य वर्ष अपनी पढ़ाई के लिए समर्पित कर दिए हैं, उनकी लंबी कतार को रोजगार विनिमय कार्यालय के सामने खड़ा देखकर दुख होता है। क्या यह आश्चर्य और आश्चर्य की बात नहीं है कि शिक्षा प्राप्त करने में उन्होंने जो वर्ष व्यतीत किये वे केवल समय की बर्बादी साबित हुए और उन्हें बेकार की गपशप करने वाले, शारीरिक श्रम से नफरत करने वाले और सुख-सुविधाओं के गुलाम बना दिया। भारत में लगभग 134 मिलियन साक्षर युवा किसी न किसी नौकरी में कार्यरत हैं; उनमें से 58% अपनी जॉब प्रोफाइल से संतुष्ट हैं जबकि 38% असंतुष्ट हैं। मौजूदा नौकरी से असंतोष का प्रमुख कारण 'असुरक्षित नौकरी', 'कम वेतन', 'तनावपूर्ण माहौल' और नौकरी-योग्यता का बेमेल होना प्रतीत होता है।

2. भारत में बेरोजगारी के प्रकार

2.1 संरचनात्मक बेरोजगारी

जब काम की मांग श्रम बल की आपूर्ति से कम हो जाती है, तो इस प्रकार की बेरोजगारी उत्पन्न होती है। भारत में बेरोजगारी मूलतः इसी श्रेणी की है। विशाल जनसंख्या इसका प्रमुख कारक है।

अधिक जनसंख्या --> अधिक नौकरी चाहने वाले ---> संरचनात्मक <--- कम नौकरियाँ

2.2 रोजगार के अंतर्गत

कुछ लोग कार्यरत तो हैं, लेकिन उनकी कार्यकुशलता और क्षमता का उपयोग अधिकतम स्तर तक नहीं हो पाता है। गलाकाट प्रतिस्पर्धाओं के कारण इस प्रकार का रोजगार बढ़ रहा है और जो लोग आवश्यकता से अधिक योग्य हैं वे भी नौकरी की सुरक्षा पाने के लिए कम काम करने को तैयार हैं। ऐसा आमतौर पर सार्वजनिक क्षेत्र में देखा जाता है। यह अपने आप में विशिष्ट रूप से खतरनाक है क्योंकि एक अल्प-रोज़गार व्यक्ति या तो अपने काम के प्रति अरुचि पैदा कर सकता है या अधिक पैसा कमाने के लिए भ्रष्टाचार का विकल्प चुन सकता है, जो उसे लगता है कि उसे अपनी अधिक योग्यता के लिए मिलना चाहिए।

उच्च प्रतिस्पर्धा --> अल्प रोज़गार --> भ्रष्टाचार --> काला धन -- ----> अर्थव्यवस्था में गिरावट

2.3 मौसमी बेरोजगारी

ऐसा मौसम में बदलाव के साथ मांग में बदलाव के कारण होता है। कृषि और कृषि से संबंधित क्षेत्रों में इस प्रकार की बेरोजगारी का अनुभव होता है। भारतीय कृषि केवल 7-8 महीनों के लिए रोजगार सुनिश्चित करती है और खेतिहर मजदूर वर्ष के बाकी समय बेरोजगार रहते हैं।

शुष्क मौसम-->कोई फसल नहीं-->मौसमी बेरोजगारी--->शहरी प्रवास

2.4 मौसमी बेरोजगारी

जब काम करने के इच्छुक और काम करने में सक्षम लोगों को कोई काम नहीं मिलता है, तो वे इस श्रेणी में आते हैं। शिक्षित बेरोजगारी और अकुशल श्रमिक बेरोजगारी इसी प्रकार की हैं। ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की ओर बढ़ता पलायन इसका मुख्य कारण है।

शहरी प्रवास -> खुली बेरोजगारी

3. शिक्षित बेरोजगारी के कारण

बेरोज़गारी का मतलब है कि लोग काम तो करना चाहते हैं, लेकिन उनके पास करने के लिए कोई काम नहीं है। भारत की गरीबी और पिछड़ेपन का सबसे महत्वपूर्ण कारण उनकी बेरोजगारी की समस्या है।

3.1 शैक्षणिक संस्थान

शिक्षा सिर्फ एक पेशा बनकर रह गई है। कॉलेज गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के लिए नहीं बल्कि पैसा कमाने के लिए बनाये जा रहे हैं। हर साल हमारे शैक्षणिक संस्थान हजारों स्नातक और स्नातकोत्तर तैयार कर रहे हैं। ये लोग कोई भी शारीरिक काम लेने से इंकार कर देते हैं। यहां तक कि कृषि स्नातक भी गांवों में जाकर खेतों में काम करने से इनकार करते हैं। इंजीनियर अपना उद्योग स्थापित करने के बजाय सरकारी नौकरी की चाहत रखते हैं। इसलिए हमारी शिक्षा प्रणाली में व्यापक बदलाव की जरूरत है। अधिक निजी इंजीनियरिंग कॉलेज खोलना बेरोजगारी की समस्या को बढ़ावा दे रहा है।

तालिका 1. विश्वविद्यालय/विश्वविद्यालय स्तरीय संस्थान के प्रकार (स्रोत: यूजीसी रिपोर्ट 2018)

sr. no.	Type of Institutions	number of institutions	number of institutions
		31-03-2018	31-03-2023
1	Central Universities	48	56
2	State University	384	480
3	State Private University	290	457
4	Institutions Established Through State Legislation	3	6
5	Institution Deemed to Be Universities	123	124
6	Institutes Of National Importance	103	165
	Total		
7	Colleges	42322	43796

3.2 माता-पिता का दबाव

बढ़ती बेरोज़गारी का एक अन्य कारक माता-पिता का दबाव है। शिक्षित बेरोजगारी स्नातकों की आकांक्षाओं और उनके लिए उपलब्ध रोजगार के अवसरों के बीच बेमेल होने के कारण है। भारतीय समुदाय में देखा जाता है कि माता-पिता अपने बेटे को इंजीनियर या डॉक्टर बनाने के लिए 95% अंक लाने के बाद उसे साइंस स्ट्रीम में डाल देते हैं। माता-पिता शायद ही यह सोचते हैं कि उनका बच्चा क्या पढ़ना चाहता है, उसकी इच्छाएं क्या हैं।

3.3 ट्रेंड के पीछे भागना

कुछ समय पहले मैनेजमेंट कोर्स की बहुत ज्यादा मांग थी, हर कोई मैनेजर बनना चाहता था। आजकल इंजीनियरिंग का क्रेज सातवें आसमान पर चढ़ गया है। छात्र किसी प्राइवेट कॉलेज में जाकर एडमिशन ले लेते हैं। उन्हें लगता है कि इंजीनियरिंग जल्दी पैसा कमाने का जरिया है। अपनी क्षमताओं को जानने के बावजूद वे आंख मूंदकर चलन के पीछे भाग रहे हैं। NASSCOM की नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार भारत में केवल 25% इंजीनियरिंग स्नातक ही रोजगार योग्य हैं, इसका कारण इंजीनियरिंग कॉलेजों में शिक्षा की खराब गुणवत्ता है। इस देश में अधिकतम छात्र मध्यम वर्ग से हैं। माता-पिता उन पर लाखों रुपए खर्च कर देते हैं, ताकि स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्हें नौकरी मिल जाएगी। लेकिन जब छात्र नौकरी पाने में असफल हो जाता है तो उसकी मानसिक स्थिति ख़राब हो जाती है और वह उदास हो जाता है।

तालिका 2. नामांकित छात्रों की संख्या (स्रोत: यूजीसी रिपोर्ट 2021-22)

Year	2016-17	2017-18	2018-19	2019-20	2020-21
students	35705905	36642378	37399388	38536359	39434256

3.4 शिक्षित बेरोजगारी के कुछ अन्य कारण

क) बढ़ती जनसंख्या

ख) मंदी

ग) मुद्रास्फीति

घ) कार्य करने में असमर्थता

च) भाई-भतीजावाद

छ) अत्यधिक कुशल श्रम की मांग।

ज) नियोक्ताओं के प्रति रवैया

झ) व्यापार चक्र में उतार-चढ़ाव

ट) कर्मचारियों की असंतुष्ट आय या वेतन

थ) युवा लोग ऐसी नौकरियाँ लेने के लिए तैयार नहीं हैं जिन्हें सामाजिक रूप से अपमानजनक या निम्न स्तर का माना जाता है

4. मनोवैज्ञानिक परिवर्तन और शिक्षित बेरोजगारी: एक वैश्विक परिप्रेक्ष्य

आजकल हर कोई अपनी नौकरी के दम पर करोड़पति बनना चाहता है। वे अपनी क्षमताओं और अपने द्वारा किए गए प्रयासों को नज़रअंदाज़ करके बहुत कुछ की उम्मीद कर रहे हैं। खराब विशेषज्ञता, नौकरी के प्रति बेईमानी, ईमानदारी से काम न करना और सपनों की दुनिया में रहना इसमें और नमक डाल रहा है।

एक अच्छी नौकरी = एक अच्छा वेतन + अच्छा कामकाजी माहौल + एक दिलचस्प नौकरी

तालिका 3. एक अच्छी नौकरी का मतलब (स्रोत: युवा बेरोजगारी - युवाओं की जरूरतों को पूरा करना, अनुसंधान और संबंधित साहित्य की एक एनोटेट ग्रंथ सूची (1998 - 2003), यूनेस्को-यूएनईवीओसी)

Country	A Good Salary (%)	A Good working Atmosphere (%)	An Interesting Job (%)
Russia	71	52	65
Poland	69	50	47
South Africa	67	42	39
Estonia	64	52	52
France	62	55	57
Canada	62	45	44
United State	62	43	42
Mexico	62	40	30
Brazil	62	39	28
United Kingdom	61	50	54
Germany	58	62	42
Australia	58	50	44
Spain	57	50	40
Romania	57	43	25
Italy	56	43	40
India	56	42	30
Turkey	54	42	13
Hungary	53	49	26

4.1 पैसा

"अगले 15 वर्षों के दौरान आप क्या हासिल करने की उम्मीद करते हैं?" उत्तर चौंकाने वाले परिणाम देता है, "बहुत सारा पैसा कमाना" 60% युवा भारतीयों द्वारा चुना जाता है, जबकि 47% यूरोपीय लोगों द्वारा। इसलिए वित्तीय सफलता भारतीयों के लिए प्राथमिकता है। संतोषजनक नौकरी के मानदंडों में, अच्छे वेतन के बाद अच्छे करियर के अवसर दूसरे स्थान पर (44%) आते हैं, जबकि यूरोपीय लोगों के लिए यह 26% और चीनियों के लिए 27% है। 20% भारतीयों, 8% यूरोपीय और 12% चीनियों द्वारा प्रतिष्ठित स्थिति का हवाला दिया जाता है।

4.2 प्रसिद्धि

अच्छी नौकरी के लिए सुझाए गए मानदंडों में से, एक प्रतिष्ठित स्थिति को विशेष रूप से युवा तुर्क (24%), भारतीय (20%), मोरक्को (19%) और ब्राज़ीलियाई (17%) द्वारा महत्व दिया जाता है, जबकि इसे फ्रांसीसी द्वारा लगभग अनदेखा किया जाता है। (4%), ऑस्ट्रेलियाई और अमेरिकी (5%)। बहुत अधिक जिम्मेदारी वाली नौकरी करना भारतीयों (18%) के साथ-साथ फिन्स और इज़राइलियों (16%) के लिए भी कुछ हद तक महत्वपूर्ण है।

4.3 सामाजिक उपयोगिता मायने रखती है, लेकिन यह प्राथमिकता नहीं है

यद्यपि युवा लोग मुख्य रूप से ऐसी नौकरी में रुचि रखते हैं जो अच्छा भुगतान करती है, लेकिन ऐसी नौकरी करना जो समाज में सकारात्मक योगदान देता है, प्रतिष्ठा से अधिक मायने रखता है। यूरोपीय युवाओं और अन्य देशों के युवाओं के बीच एक बड़ा अंतर है: 23% युवा यूरोपीय सामाजिक को महत्व देते हैं 49% मैक्सिकन, 38% मोरक्कन, 33% ब्राज़ीलियाई, 31% भारतीय और तुर्क और 29% चीनी के विपरीत, उनकी व्यावसायिक गतिविधि की उपयोगिता

5. शिक्षित बेरोजगारी के प्रभाव

ऐसा देखा गया है कि एक साल की बेरोजगारी से जीवन प्रत्याशा पांच साल कम हो जाती है। युवाओं में उच्च रक्तचाप, हृदय संबंधी समस्याएं, साइकोन्यूरोसिस, अवसाद, आत्महत्या के साथ-साथ असामाजिक समूहों में शामिल होने सहित अन्य व्यवहार भी बढ़ रहे हैं। शराबखोरी, नशीली दवाओं की लत, धूम्रपान और लापरवाही से गाड़ी चलाने के व्यवहार में वृद्धि हुई है। ये व्यवहार उस समाज से बदला लेने के लिए हैं जिसने बेरोजगारी या समाज का उत्पादक सदस्य नहीं बन पाने के कारण युवाओं में कम आत्मसम्मान पैदा कर दिया है। हाई स्कूल जाने वाले बच्चों में आत्महत्या की दर लगातार बढ़ रही है।

5.1 कुछ अन्य प्रभाव

क) कम आर्थिक विकास।

ख) बेरोजगारी से भावनात्मक और मानसिक तनाव हो सकता है।

ग) एक व्यक्ति हतोत्साहित भी हो सकता है, वह गलत काम कर सकता है जैसे वह शराब और नशीली दवाओं के दुरुपयोग जैसी आदतों में लिप्त हो सकता है या आत्महत्या भी कर सकता है।

घ) उच्च आय असमानताएं और विषमताएं गरीबी के अलावा कुछ नहीं पैदा करतीं।

6. शिक्षित बेरोजगारी को कम करने की दिशा में प्रयास

6.1 व्यक्ति द्वारा किये गये प्रयास

10+2 के बाद एक बहुत ही महत्वपूर्ण अवधि आती है जहां हम लगभग परेशान हो जाते हैं कि किस स्ट्रीम में जाएं। यही समय है जब हमें बैठकर सोचना चाहिए कि हमारे लिए सबसे अच्छा क्या होगा। रोजगार तलाशने वालों की इस कतार में हमें बढ़ई, मोची, दर्जी या नाई भी नहीं मिलेंगे। यह स्पष्ट रूप से आधुनिक शिक्षा प्रणाली की विफलता और हमारे नीति निर्माताओं के दिवालियेपन को दर्शाता है। इसलिए यदि हम वास्तव में बेरोजगारी की समस्या का समाधान करना चाहते हैं तो शिक्षा प्रणाली को रोजगारोन्मुख बनाना होगा। अब हमारे देश को केवल क्लर्कों की आवश्यकता नहीं है, ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता है जो अपनी शारीरिक एवं मानसिक कुशलता से उसकी सेवा कर सकें।

6.1.1 शिक्षित बेरोजगारी के उपाय एवं समाधान

क) मुख्य उपाय तीव्र औद्योगीकरण में निहित है।

ख) अधिक नौकरियाँ पैदा करने के लिए तेज़ आर्थिक विकास की आवश्यकता।

ग) व्यावसायिक कौशल और स्वरोजगार पर अधिक ध्यान देने के साथ युवाओं को प्रदान की जाने वाली शिक्षा और प्रशिक्षण में सुधार की आवश्यकता।

घ) नौकरियाँ बचाने के प्रयास के लिए संघर्षरत उद्योगों को सरकारी सहायता आवश्यक है।

च) शिक्षा को बढ़ावा देना, विशेषकर महिला शिक्षा को बढ़ावा देना और लोगों को छोटे परिवार रखने के लिए प्रेरित करना।

छ) उद्यमशीलता, संचार और अंतर-कार्मिक कौशल विकास पर अधिक ध्यान केंद्रित करना

ज) सार्वजनिक-निजी, औपचारिक/अनौपचारिक शैक्षिक उद्यमों के बीच आपसी बातचीत में वृद्धि

झ) एकीकृत परामर्श, मूल्यांकन और कैरियर मार्गदर्शन पहल

6.2 सरकार द्वारा किया गया प्रयास

अ) शिक्षित बेरोजगार युवाओं के लिए प्रधान मंत्री रोजगार योजना (P.M.R.Y)

ब) शहरी इलाकों में रोजगार सृजन के लिए शिक्षित बेरोजगारों के लिए योजना (सीगुल)

क) शिक्षित बेरोजगार युवाओं के लिए स्व-रोज़गार योजना (SEEUY)

ड) राज्य सरकारों के लिए योजनाएं (शिक्षित बेरोजगार युवा) ई) भारत के योजना आयोग द्वारा "पीपीपी के माध्यम से कौशल विकास में नई पहल" के लिए योजना

6.3 सीखते हुए कमाएँ

कौशल आधारित शिक्षा- बेरोजगारी की समस्या को खत्म करने की दिशा में भारत के सामने सबसे बड़ी समस्याओं में से एक आजीविका कमाने बनाम कौशल सीखने का अंतर-अस्थायी मुद्दा है। स्कूली शिक्षा की पारंपरिक 12+4 साल की पद्धति के बजाय एक अलग स्ट्रीम की आवश्यकता है जहां उन लोगों को कौशल सिखाया जाए जिन्हें जीविकोपार्जन के लिए उनकी आवश्यकता है।

सतत मॉडलिंग

7. कैरियर निर्णय और बेरोजगारी

कैरियर मार्गदर्शन लोगों को उनकी महत्वाकांक्षाओं, रुचियों, योग्यताओं और क्षमताओं पर विचार करने में मदद करता है। इससे उन्हें श्रम बाज़ार और शिक्षा प्रणालियों को समझने में मदद मिलती है, और इसे वे अपने बारे में जो जानते हैं उससे जोड़ने में मदद मिलती है। व्यापक कैरियर मार्गदर्शन लोगों को काम और सीखने के बारे में योजना बनाना और निर्णय लेना सिखाने की कोशिश करता है। कैरियर मार्गदर्शन हमारे बाजार की प्रयोगशाला के बारे में जानकारी और शैक्षिक अवसरों के बारे में जानकारी को व्यवस्थित करके, इसे व्यवस्थित करके और लोगों को जब और जहां इसकी आवश्यकता हो, इसे उपलब्ध कराकर अधिक सुलभ बनाता है।

यदि कैरियर मार्गदर्शन का उद्देश्य जीवन और कार्य के लिए महत्वपूर्ण कौशल विकसित करना और तत्काल निर्णय लेने में सहायता करना है, तो स्कूलों के लिए इसके महत्वपूर्ण निहितार्थ हैं। उन्हें सूचना और सलाह दृष्टिकोण के अलावा, सीखने-केंद्रित दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। इसका मतलब है कैरियर शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करना।

8. निष्कर्ष

पूरा भारत डॉक्टर, इंजीनियर और एमबीए पैदा करने वालों से संतृप्त हो गया है। अब अन्य पेशे वास्तव में सीढ़ियाँ चढ़ रहे हैं और प्रत्येक छात्र के लिए कोई भी कोर्स करने से पहले अपनी क्षमताओं, अपनी रुचि को पहचानना बहुत महत्वपूर्ण है। क्योंकि, नौकरी पाने के लिए इधर-उधर भटकने से बेहतर है कि पहले

ही सोच लिया जाए। हालाँकि, रोजगार योग्यता एक अधिक गंभीर समस्या है और संपूर्ण शैक्षिक प्रणाली और पाठ्यक्रम की सामग्री के साथ-साथ व्यावहारिक व्यावहारिक प्रशिक्षण से अलग सैद्धांतिक पर जोर देने के लिए एक बड़ी चुनौती है। इस क्षेत्र में भारतीय राज्य और नीति-निर्माताओं द्वारा किए गए प्रयासों की सावधानीपूर्वक समीक्षा करने की आवश्यकता है; लेकिन यह व्यापक रूप से माना जाता है कि ये प्रयास अपर्याप्त रहे हैं।

सामाजिक क्षेत्र से संबंधित कई अन्य मामलों की तरह, कार्रवाई की तुलना में बयानबाजी अधिक हुई है और अनुशंसित नीतियों का कार्यान्वयन बेहद असंतोषजनक रहा है। युवा बेरोजगारी की उच्च दर पर नीति निर्माताओं द्वारा गंभीरता से ध्यान देने की आवश्यकता है ताकि न केवल कार्यबल में नए प्रवेशकों द्वारा सामना की जाने वाली निराशा को कम किया जा सके, बल्कि पूरे देश में युवाओं के संभावित अलगाव और विचलित व्यवहार के व्यापक साक्ष्य को भी कम किया जा सके। शिक्षा पर अंतर्राष्ट्रीय आयोग, यूनेस्को की रिपोर्ट कहती है, शिक्षा को ज्ञान के चार स्तंभों के आसपास व्यवस्थित किया जाना चाहिए यानी जानना सीखना, करना सीखना, साथ रहने के लिए कमाई करना और रहना सीखना।

संदर्भ:

अग्रवाल, पी. (2007), भारत में उच्च शिक्षा और श्रम बाजार। अग्रवाल, पी. (2007), भारत में उच्च शिक्षा और श्रम बाजार।

भारत सरकार (2007) चयनित शैक्षिक सांख्यिकी 2004-05, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली।

हसन राणा, मित्रा देवाशीष, रंजन प्रिया और अहसान रेशाद, एन. (अप्रैल 2011) 'व्यापार मुक्ति और बेरोजगारी: भारत से सिद्धांत और साक्ष्य', जर्नल ऑफ डेवलपमेंट इकोनॉमिक्स।

एमएचआरडी (2007-08) चयनित शैक्षिक सांख्यिकी, भारत सरकार।

मित्रा, ए. (2007) भारत: गैर-औपचारिक शिक्षा, सभी के लिए शिक्षा के लिए कमीशनित देश प्रोफ़ाइल, वैश्विक निगरानी रिपोर्ट 2008।

रे, एस. और चंद, आर., भारत में बेरोजगारी के सामाजिक आर्थिक आयाम, एनएसएसओ, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या। 261-274.

शुक्ला, आर. (2006), इंडिया साइंस रिपोर्ट, नेशनल काउंसिल फॉर एप्लाइड इकोनॉमिक रिसर्च।

साइमन, सी. और स्टार्क ओडेड, (मई 2007) 'अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन और शिक्षित बेरोजगारी', जर्नल ऑफ डेवलपमेंट इकोनॉमिक्स, वॉल्यूम। 83, अंक 1, पृष्ठ। 76 – 87.

यूनेस्को-यूएनईवीओसी (1998 - 2003), युवा बेरोजगारी - युवाओं की जरूरतों को पूरा करना, अनुसंधान और संबंधित साहित्य की एक एनोटेट ग्रंथ सूची, अंतर्राष्ट्रीय केंद्र प्रकाशन

संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन, 2015 तक सभी के लिए शिक्षा: क्या हम इसे बनाएंगे?, पेरिस।

Certificate No.:010212202315

multidisciplinary COSMOPOLITAN JOURNAL OF RESEARCH
(MUCOJOR)-2583-9829 (on-line)
International Peer Reviewed and Refereed Journal

Certification of Publication

The Board of Multidisciplinary Cosmopolitan Journal of Research (MUCOJOR) is hereby awarding this certificate to

सौरभकुमार रणजीतसिंह वसावा

In recognition of the publication of the paper entitled

शिक्षित बेरोजगार - शिक्षा के समक्ष एक चुनौती

Published in Volume 01, Issue 02, December 2023.

EDITOR IN CHIEF